International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, January-June 2016, Submitted in January 2016, iajesm2014@gmail.com

किसानों को सम्भल देती सब्जियों की कृषि

डॉ मदन लाल, प्राचार्य एवं व्याख्याता भूगोल, गुरुनानक कन्या महाविद्यालय, गजसिंगपुर।
डॉ हरीश कंसल, प्राचार्य, विनायक महाविद्यालय, श्री विजयनगर, श्री गंगानगर

प्रस्तावित शोध का परिचय

भारत एक कृषि प्रधान राष्ट्र है। यहां की अधिकांश आबादी कृषि एवं सम्बद्ध कार्यो में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संलग्न है। साक–सब्जियों का महत्व आदिकाल से चला आया है। मानव स्वास्थ्य, सौन्दर्य, पर्यावरण शुद्धता एवं आर्थिक दृष्टि से सब्जियों का अधिक महत्व है। शोध पत्र में हनुमानगढ़ जिले की सब्जी कृषि का भौगोलिक अध्ययन किया गया है। हनुमानगढ़ जिले में सब्जी उत्पादन की भौगोलिक दशाएं अनुकूल है। घग्घर बेल्ट की उपजाऊ मृदा, मीठा जल, यातायात सुविधा, उपभोक्ता बाजार इत्यादि ने कृषकों को इस ओर आकर्षित किया है। जिले में खरीफ–रबी–जायद तीनों ऋतुओं में सब्जी उत्पादन किया जाता है। जिले में आलू, मैथी, गाजर, मूली, भिण्डी, मटर, ककड़ी, खीरा, लोकी, प्याज, लहसून इत्यादि कृषि आधुनिक तकनीको से की जाती है। बढ़ती जनसंख्या, बेरोजगारी, मंहगाई, लघु जोतों का आकार, इत्यादि के लिए सब्जी की खेती के साथ मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, डेयरी, पशुपालन, मुर्गीपालन इत्यादि लाभकारी हो रही है। शोध क्षेत्र में सब्जी की खेती को बढ़ाना देने के लिए सड़कों, मंडियों, पैकिंग, प्रसंस्करण इकाईयों, कोल्डस्टोरेज का विकास एवं कृषि यंत्रों, तकनीकों, उन्नत बीज, खाद उर्वरक इत्यादि में सरकारी सहायता से सब्जियों की खेती क्षेत्र के किसानों को आकृषित करेगी।

प्रस्तावित शोध के सोपान

जिले में रबी, खरीफ एवं जायद तीनों ऋतुओं की साग–सब्जियाँ पैदा की जाती हैं। बढ़ती जनसंख्या, मंहगाई, परम्परागत खेती में अधिक लागत एवं कम बचत, पानी की कमी, प्राकृतिक प्रकोप, घटता जोतों का आकार इत्यादि ने लोगों को गैर परम्परागत खेती विशेषकर साक–सब्जी की तरफ मोड़ा है। जिले के कृषक भिण्डी, तोरी, लोकी, बैंगन, टमाटर, खीरा, मिर्च, लहसुन, प्याज, आलू, मूली, गाजर, गोभी, मटर, टिण्डा, खरबूजा, तरबूज, ककड़ी तर, पेठा, मैथी, ग्वारफली, पोदिना, धनियां सौंफ, करेला इत्यादि की उद्यानिकी कर रहे है।

सब्जी की कृषि से प्रति इकाई अधिक उत्पादन, पोषाहार सुरक्षा, रोजगार का हल, कृषि विविधीकरण, मृदा उर्वरता में वृद्धि साग–सब्जियों का जीवन में बहुउपयोग पर्यावरण शुद्धता, सौंदर्य, कच्चा माल, अधिक लाभ इत्यादि प्राप्त होने के कारण यहां का कृषक साक–सब्जी की खेती की ओर आकर्षित हुआ है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

हनुमानगढ़ जिले के दक्षिणी क्षेत्र में जल की पर्याप्त कमी है। अतः बूंद–बूंद सिंचाई, जल संग्रहण, सामूहिक डिग्गी इत्यादि द्वारा जल की बचत कर साग–सब्जी की कृषि उपयुक्त है एवं उन क्षेत्रों में शुष्क कृषि अनुकूल रहेगी या कम जल वाली खेती कर सकते है जैसे – प्याज, मैथी, ग्वारफली, मूली, ककड़ी, तोरी, ग्वारपाठा, बैंगन, टिंडा, लहसुन, मतीरा, काचर, सांगरी इत्यादि।

प्रस्तावित शोध का महत्व

जिले में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत पक्की डिग्गी निर्माण हेतु कृषकों को अनुदान दिया जा रहा है तथा पिछले कुछ वर्षो में 3000 कृषकों को लाभान्वित किया जा चुका है। कुछ कृषक ड्रिप संयन्त्रो, फव्वारा सयन्त्र पद्धति स्थापित कर परम्परागत फसलों के साथ–साथ सब्जियों का भी उत्पादन कर रहे है। ड्रिप पद्धति द्वारा, सतही सिंचाई की अपेक्षा, सब्जियों के उत्पादन में गुणात्मक एवं मात्रात्मक वृद्धि देखी गयी हैं यदि इन कृषकों को उत्पादन सम्बन्धी तकनीकी प्रशिक्षण (प्लास्टिक टनल, ग्रीन हाउस, शैडनेट हाउस) देकर उत्पादन में बढ़ोतरी के साथ–साथ सब्जियों की उच्च गुणवता प्राप्त की जा सकती है।

हनुमानगढ़ जिले में सबसे अधिक सब्जियां हनुमानगढ़, पीलीबंगा, टिब्बी, संगरिया तहसीलों में होती है। जिसका कारण समतल व उपजाऊ भूमि, पर्याप्त जल एवं उपभोक्ता बाजारों की सुविधा इत्यादि रही है। भादरा–नोहर–रावतसर में सब्जियों की कृषि कम होती है। जिसका कारण शुष्क व अनुपजाऊ मृदा, जलाभाव इत्यादि रही है।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

जिले में सब्जी एवं मसालों की खेती के प्रति लोगों का रूझान दिनों दिन बढ़ रहा है। इसका कारण वर्ष में 2 या 3 फसलें ले सकते हैं– रबी, खरीफ एवं जायद। हनुमानगढ़ जिले में प्रधानतः आलू, भिण्डी, मटर, गोभी, मिर्च, गाजर इत्यादि सब्जियां एवं मैथी, लहसुन, धनियां, सौंफ इत्यादि मसालों की कृषि होती है। वर्ष 2013–14 की तुलना में वर्ष 2015–16 में सब्जी एवं मसालों के उत्पादन में वृद्धि अंकित हुई। जैसे भिण्डी का वर्ष 2013–14 में उत्पादन 625 मी.टन एवं उपज 8803 किग्रा प्रति हेक्टेयर हुआ वहीं पर्ष 2015–16 में क्रमशः 844 मैट्रिक टन व 1816 किग्रा प्रति हेक्टेयर हुआ। अध्ययन क्षेत्र में उत्पादन में वृद्धि का कारण नवीन तकनीक, उचित देखभालबाजार की निकटता, नकदी फसलें एवं उद्यानिकी विभागानुसार सब्जी, मसाला उत्पादन करना रहा है।

शोध क्षेत्र में कृषकों को साग–सब्जी की गैर परम्परागत खेती की ओर प्रोत्साहन देने के लिए उद्यान विभाग, सौर ऊर्जा संयत्र, बूंद–बूंद व फव्वारा संयत्र, प्लास्टिक टनल, ग्रीन हाउस, शेटनेट, डिग्गी निर्माण, कृषि औजार, बीज, उर्वरक इत्यादि हेतु अनुदान एवं आर्थिक सहायता करता है।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. धवन बी.डी. (1989): एग्रीकल्चर प्रोडक्टीविटी इन इंडिया–ए स्पाशियल एनालिसिस वोल्युम–70
2. होटीकल्चर डिपार्टमेंट जयपुर।
3. ।हतपबनसजनतमण तंरेंजींदण्हवअण्पद
4. ऐरी बाबू श्याम गोपालः सब्जियां उगाएं आय बढ़ाएं, राष्ट्रीय साहित्य सदन, दिल्ली
5. आर्य, रोहित कुमार 2007 :फल आधारित बहुप्रजाती फसल प्रणाली। पेज 1–2, केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर।
6. बारलो, आर 1961 : सॉयल सर्वे एड लैण्ड इवोल्यूशन, जार्ज व अलेन एण्ड आनवीन, लन्दन वोल्यूम–6

9828015814 9309415814
SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY